ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 227-228
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

वर्तमान परिदृश्य में विश्वशान्ति और सर्वोदय विचार : एक अध्ययन

पवन कुमार मिश्रा

शोध अध्येता–राजनीति विज्ञान,राजनीति विज्ञान अध्ययनशाला

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म0प्र0), भारत

Received- 08.07.2020, Revised- 13.07.2020, Accepted - 18.07.2020 E-mail: pawanmishra5075@gmail.com

सारांश : *वर्तमान विश्ववातावरण और राष्ट्रो की गतिविधियों एवं अन्तः सम्बन्धों पर यदि एक दृष्टिपात किया जाये तो प्रत्येक राष्ट्र संघर्षरत है राज्यों में आपसी तनाव, सीमा विवाद, जल विवाद जैसे मुद्दे बने हुये है जो अंततः संघर्ष के वातावरण का निर्माण करते है। राष्ट्रों की गतिविधियों को देखा जाये तो कही एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को नीचा दिखाना चाहता, तो कही अपने व्यापारिक हितो की पूर्ति के लिये एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर दबाब बनाता है, तो कही कोई राष्ट्र अत्यन्त विनाशकारी सुपरसोनिक मिसाल का परीक्षण कर रहा, तो कही कोई राष्ट्र दूसरे राष्ट्र में अशान्ति फैलाने हेतु आतंकवादी समूह/कट्टरपंथियो को संरक्षण प्रदान कर रहा है, एक तरह से देखा जाये तो सम्पूर्ण विश्व समुदाय अशान्ति के घने बादलो से घिरा हुआ है। ऐसे विश्व वातावरण में विभिन्न विद्वानों, वैश्विक संगठनो द्वारा निरन्तर ये प्रयास किया जा रहा है कि वर्तमान परिस्थितियों कैसे विश्वशान्ति की स्थापना की जाये।*

कुंजीभूत शब्द– वरववातावरण , संघर्षरत, राष्ट्रों की गतिविधियाँ, धनाराकारी सुपरसोनिक, वरव वातावरण ।

जब–जब विश्व शान्ति की स्थापना के लिये मार्ग खोजा जाता है तो सर्वप्रथम गाँधीवादी मार्ग मानस पटल पर उभरता है। गाँधी जी का चिन्तन मानव जाति की प्रत्येक समस्या का एक विशद और स्पष्ट समाधान प्रस्तुत करता है। यदि गाँधी जी के चिन्तन को देखा जाये तो सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह और सर्वोदय इन चार प्रमुख स्तम्भों पर खड़ा प्रतीत होता है। गाँधी जी का सर्वोदय चिन्तन गाँधी जी का लोककल्याणकारी चिन्तन है इसका एक मात्र लक्ष्य है मानव और मानव जाति का कल्याण। मानव जाति का कल्याण तभी सम्भव है जब विश्व परिवेश में शान्ति स्थापित हो और शस्त्र की जगह शास्त्र, विनाश की जगह विकास, हिंसा की जगह अहिंसा और प्रेम ग्रहण कर लें। इस हेतु गान्धी जी के सर्वोदयी चिन्तन में विश्व शान्ति की स्थापना हेतु एक विशद और स्पश्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

सर्वोदय चिन्तन भारत में प्राचीन काल से जीवान्त रहा है शाब्दिक अर्थ में इसका तात्पर्य 'सर्व कल्याण' से है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का संदेश भी सर्वोदय की ओर संकेत करता है महावीर एव बुद्ध का प्रेम सत्य और अंहिसा का संदेश भी सर्वोदय चिन्तन की ओर इंगित करता है। गीता के 'सर्वभूत हितेरता' का तात्पर्य भी सर्वोदय ही है। विश्व में सभी का समान रूप से उदय अथवा सर्वांगीण विकाश ही सर्वोदय की सरल तथा साधारण परिभाषा है। सर्वोदय का साधन 'सर्व' शब्द की व्याख्या में निहित है अर्थात विश्व राष्ट्र ग्राम व परिवार के प्रति समान रूप से कर्तव्य परायणता। जिस प्रकार अपने परिवार के कल्याण के लिए आत्मियता, सम्मभाव और जीवकोपार्जन के साधनों को समान वितरण ही सर्वोदय का मूल मन्त्र है।वास्तव में सर्वोदय की अवधारणा मानव जाति को सन्देश देती है कि जिस प्रकार व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी अपने कर्तव्यों का पालन करता है। यदि उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति विश्व समुदाय को अपना परिवार समझते हुए अपने कर्तव्यों को निर्वाहन करे और विश्व के प्रत्येक प्राणी मात्र के दुख को अपना दुख समझते हुए उसके दुख निवारण हेतु कार्य करे तो निसन्देह विश्व में कटुता, वैयमनुष्यता, ईर्ष्या राग द्वैष समाप्त हो जायेगे और विश्व शान्ति की स्थापना सम्भव हो सकेगी जैसा कि भारतीय पुराणों में कहा गया–

अयम् निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम।
उदारचरितः नाम् तु बसुधैव कुटुम्बकम।

महात्मा गान्धी भारतीय संस्कृति से भलीभांति परिचित थे और इसके पोषक भी थ। इसके अतिरिक्त रशकिन की 'अन टु दिस लास्ट' ने भी उन्हे अत्यधिक प्रभावित किया और सर्वोदयी अवधारण को मजबूत बनाया। उन्होने सर्वोदय को मानव कल्याण का साधन बनाया और एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की एक ऐसा समाज जिसमें नैतिक बल, आध्यात्म, शक्ति, प्रेम, त्याग, सत्य और अहिंसा का समावेश हो। जिस रूप में गाँधी जी ने समाज की कल्पना की यदि उसी रूप विश्व समाज की कल्पना की जाये जिसमें वर्तमान समय के विश्व के सामरिक/आणविक बल के स्थान पर नैतिक बल भौतिकवाद के स्थान पर आध्यात्मवाद, घृणा के स्थान पर प्रेम हो तो

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

निसन्देह विश्व समुदाय में शान्ति नहीं वल्कि चिर शान्ति की स्थापना सम्भव हो सकेगी।

गान्धी जी के सर्वोदय के यदि प्रमुख सिद्धान्तों पर दृष्टि पात किया जाये और उनका विश्व परिस्थितयों के आधार पर अनुकरण किया जाये तो यह सिद्धान्त वर्तमान विश्व में तनाव और अशान्ति को कम करके विश्व शान्ति की स्थापना में सहायक सिद्ध हो सकता है।

गाँधी जी का सर्वोदयी चिन्तन कहता है सबके लिए भला सोचना और उसमें अपना हित समझना। सभी के कार्यो का समान्य मूल्यांकन और जीवकोपार्जन के साधन अर्जन में समानता साथ ही 'सादा जीवन उच्च विचार' को कार्य रूप प्रदान करना। यदि विश्व समुदाय सर्वोदयी चिन्तन को अपना कर सबके भले और सबके हित के लिये कार्य करना आरम्भ कर दे तो विष्व में व्याप्त असमानता काफी मात्रा में समाप्त हो जायेगी। वर्तमान विश्व आज दो भागों में बटा प्रतीत होता है एक भाग में कुछ चंद अमीर देश जिनके प्रचुर संसाधन एवं धन है। इन अमीर देशों द्वारा प्रतिदिन अपनी तकनीकि और सम्पन्नता में वृद्धि की जा रही जबकि दूसरी ओर ऐसे राष्ट्र है जो अपनी सम्पूर्ण जनसंख्या के लिये दो वक्त के भोजन की व्यवस्था करने में असमर्थ है। ऐसे समय में गाँधी की सबका मंगल और सबके भले वाली परिकल्पना को साकार कर विश्व व्यवस्था में व्याप्त असमानता को समाप्त किया जा सकता है। जिससे गरीब देशों के नागरिको को पर्याप्त संसधन प्राप्त हो सके और वह पद विमुख होकर शस्त्र की जगह अपने उत्थान की तकनीक को अपने हाथों में ग्रहण करे।

गाँधी जी का सर्वोदयी चिन्तन आग्रह करता है कि मानव मात्र का कर्तव्य है समस्त मानव जाति में समन्वय और सुख वृद्धि की उत्पति करना। गान्धी जी का यह कथन अपने अर्थ में काफी व्यापकता धारण किये हुये है। मानव इस ग्रह का और प्रकृति का सबसे सुन्दर प्राणी है। गान्धी जी उसी मानव को उसके कर्तव्य की ओर प्रेरित करते हुये कहते है कि मानव न केवल अपने वल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के सुख में वृद्धि करे साथ ही मानव जाति में समन्वय स्थापित करे। मुख्यतः गान्धी जी यहॉ भारतीय संस्कृति के परोपकार की अवधारणा को पुष्ट करते है जैसा कि श्री रामचरित्र मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने कहाहै– "परहित सरिस धरम नहीं भाई। पर पीडा सम नहीं अधमाई।।"

आज विश्व समुदाय में इसी भावना की कमी है स्वार्थ स्वःहित की भावना इतनी अधिक विकसित हो चुकी है जिसमें व्यकित केवल और केवल अपने स्वार्थो की सिद्धी करना चाहता है चाहे इसके लिये मानवता को कितनी भी बडी कीमत चुकानी पड़े। यदि गाँधी के कथन का विश्व समुदाय द्वारा अनुकरण किया जाए और अपने क्षणिक व तातकालिक स्वार्थो का त्याग कर मानव जाति के कल्याण के दीर्घ कालिक उद्देश्यों का अनुकरण किया जाये तो निसन्देह विश्व वातावरण शान्ति में हो जायेगा।

गाँधी जी के सर्वोदय चिन्तन में यह बात स्पष्ट निकल कर आती है कि मनुष्य तभी सुखी जीवन निर्वाह कर सकता है जबकि वह नैतिक नियमों का अनुपालन करे। नैतिकता वह परिधि है जो व्यक्ति को अच्छाई व बुराई के बीच अन्तर स्पष्ट करता है। गाँधी जी ने अपने जीवन में सदैव आध्यामित्यकता पर बल दिया और सत्य को जीवन की कुंजी माना। सत्य के बिना कोई भी व्यक्ति किसी सिद्धान्त या नियम का पालन करने में समर्थ नही हो सकता है।

गाँधी जी ने सर्वोदय दर्शन के द्वारा मानवीय जीवन को परिष्कृत करके संसार के सम्मुख प्रस्तुत किया। संसार के मूल में मानव व्यवहार है, यदि मानव अपने व्यवहार आचरण तथा स्वभाव को नियंत्रित कर ले और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को ह्रदय की असीम गहराइयों में स्थापित कर ले तो सारा विश्व एक परिवार की भांति शान्ति पूर्ण वातावरण की ज्योति से प्रकाशित हो जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय डा0 जनार्दन – सर्वोदय का राजनीतिक दर्शन ।
2. गाँधी मार्ग पत्रिका ।
3. गाँधी मोहनदास करम चन्द्र – सर्वोदय ।
4. देव शंकर राव – सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र ।
5. maajtak.com.
6. webduniya.com.
7. तुलसीकृत – श्री रामचरित मानस ।

*****